P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कानपुर नगर में बालिकाओं की उच्च शिक्षा में महिला शिक्षिकाओं का योगदान

ममता शुक्ला
विभागाध्यक्षा,
बी०एड० विभाग,
विवेकानन्द ग्रामोद्योग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दिबियापुर, औरैया

सारांश

नवजागरण के इस युग में जब से नारी ने स्वयं को पहचानने की कोशिश की है। तबसे उसके आत्मबल, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, में अभूतपूर्व वृद्धि हुयी है तथा समाज में नया बदलाव भी आया है। छठी पंचवर्षीय योजनाओं में पहली बार 'महिलायें' और विकास पर एक अध्याय जोड़ा गया, जिससे महिलाओं के आर्थिक उत्थान और सहायता पर बल देने के साथ–साथ दहेज जैसी बुराइयों के विरूद्ध जनमत तैयार करने और महिलाओं तथा बच्चों के लिए रोजगार शिक्षा स्वास्थ्य और पोषण सम्बन्धी सुविधायें उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। नये बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अर्न्तगत महिलाओं के लिए समानता पर विशेष बल दिया गया है। बीस सूत्रीय कार्यक्रम का बारहवॉ सूत्र केवल महिलाओं और विकास के बारे में है।

हमारे संविधान के अनुसार महिला एवं पुरूषों को रोजगार एवं नियुक्ति का समान अवसर प्रदान किया है। समाज वेतन एक्ट 1976 के आधार पर महिला एवं पुरूष कर्मियों को समान कार्य के लिए समान वेतन का प्रावधान है। संविधान एवं न्यायपालिका दोनो महिला एवं पुरूषों को रोजगार के अवसर प्रदान करती है।

मुख्य शब्द : नारी शिक्षा, बीस सूत्रीय कार्यक्रम, वेतन एक्ट।

प्रस्तावना

आज की नारी शिक्षा एवं अपने लक्ष्य के प्रति विस्तृत सोच रखती है। उसे अपनी योग्यताओं का एवं अपनी उपलब्धविद्याओं का एहसास है वह अपना, अलग अस्तित्व रखने के लिए प्रयत्नशील है। देव (1971) द्वारा किए गये शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि स्वतंत्रता के पश्चात् 1947 में शिक्षा के सभी क्षेत्रों में स्त्रियां प्रवेश ले चुकी थी। गाँधी (1977) नें उच्चशिक्षा में छात्राओं ने प्रवेश लेना प्रारम्भ कर दिया। कला, विज्ञान तथा वाणिज्य विभागों में छात्राओं के नामांकन का प्रतिशत क्रमशः 62, 31 एवं 14 था। चौधरी पी० के० (1998) ने पाया कि शिक्षित स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हैं। स्त्री शिक्षा, सह शिक्षा और स्त्री रोजगार की ओर सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है और उन्हें ये विश्वास था कि शिक्षा और रोजगार स्त्रियों को समायोजन में अधिक योग्य बनाते है। कन्तमभा के, (1990) नें स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा द्वारा निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। डालर माग्रेट सी, (1991) ने पाया कि स्त्रीयों नें कुछ क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है। शिक्षित स्त्रियाँ सभी प्रकार की स्त्रियों की आवश्यकताओं को समझकर स्त्री शिक्षा फैलाकर, स्त्रियों के सोचने के ढंग को पुनः समायोजित करके, स्त्रियों की उच्चशिक्षा में सुधार करके अपना योगदान दे रहीं थी।

स्वतंत्रता के पश्चात स्त्री शिक्षा के लिए प्रयास किये गये। विभिन्न कार्यक्रम और योजनायें बनायी गयी। सम्मेलन, सेमीनार आयोजित किए गये है, उसका लाभ स्त्रियों को मिला या नही। स्त्रियों में शिक्षा द्वारा कितना परिवर्तन हुआ है? उनका शिक्षा एवं समाज में क्या योगदान है ? इस हेतु शोधकर्त्री ने इस समस्या को अपने अध्ययन विषय के रूप में चयन किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. कानपुर नगर में अध्ययनरत् छात्राओं की संख्या ज्ञात करना ।
2. उच्च शिक्षा स्तर पर महिला शिक्षिकाओं की संख्या ज्ञात करना।
3. उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् शिक्षिकाओं की शैक्षिक योग्यताओं की जानकारी प्राप्त करना।
4. कानपुर नगर में उच्च शिक्षा स्तर पर संकायवार शिक्षिकाओं एवं छात्राओं का औसत ज्ञात करना।
5. कानपुर नगर में उच्च शिक्षा स्तर पर संकायवार शिक्षिकाओं एवं छात्राओं का औसत ज्ञात करना।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन कानपुर नगर के महाविद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं एवं छात्राओं की संख्या तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर नगर के महाविद्यालयों में बालिकाओं की उच्च – शिक्षा के स्तर पर कार्यरत सम्पूर्ण महिला शिक्षिकाओ का चयन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य पूर्ति हेतु इन्हें 06 संकायों में विभाजित किया गया है –

न्यादर्श

कला संकाय विज्ञान संकाय वाणिज्य संकाय विधि संकाय शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय प्रौद्योगिकी संकाय

प्रदत्तों का संकलन

अनुसंधानकर्त्री ने कानपुर नगर स्थित छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर सें सम्बद्ध महाविद्यालयों की सूची प्राप्त कर उच्च शिक्षा स्तर पर संकायवार महाविद्यालयों की संख्या एवं महाविद्यालयों में जाकर पंजीकृत छात्राओं की संख्या, शिक्षिकाओं की संख्या एवं शिक्षिकाओं से व्यक्तिगत रूप से उनकी शैक्षिक योग्यताओं की जानकारी प्राप्त की।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में क्रमबद्ध रूप से कला संकाय, विज्ञान संकाय, वाणिज्य संकाय, विधि संकाय, शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय एवं संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं एवं उन महाविद्यालयों एवं संस्थानों में अध्ययनरत् छात्राओं की संख्या एवं स्थिति का अध्ययन संकायों के आधार पर किया गया है–

तालिका – 1

उच्च शिक्षा स्तर पर संकायवार महाविद्यालयों की संख्या

क्रम संख्या	संकाय	महाविद्यालयों की संख्या/संस्थान
1.	कला संकाय	17
2.	विज्ञान संकाय	11
3.	वाणिज्य संकाय	06
4.	विधि संकाय	03
5.	शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय	06
6.	प्रौद्योगिकी संकाय	04

तालिका – 1 से ज्ञात होता है कि वाणिज्य संकाय और विधि संकाय के महाविद्यालयों का नितांत अभाव है।

तालिका – 2

उच्च–शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयों में संकायवार छात्राओं की संख्या

क्रम संख्या	संकाय	छात्राओं की संख्या
1.	कला संकाय	29915
2.	विज्ञान संकाय	5751
3.	वाणिज्य संकाय	1041
4.	विधि संकाय	1764
5.	शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय	575
6.	प्रौद्योगिकी संकाय	1088

तलिका –2 से स्पष्ट होता है। कि वाणिज्य संकाय प्रौद्योगिकी संकाय की तुलना में कला संकाय में छात्राओं की संख्या सर्वाधिक है। शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय में अध्ययनरत् छात्राओं का स्थान सीमित है।

तालिका – 3

उच्च शिक्षा स्तर पर संकायवार शिक्षिकाओं की संख्या

क्रम संख्या	संकाय	छात्राओं की संख्या
1.	कला संकाय	367
2.	विज्ञान संकाय	130
3.	वाणिज्य संकाय	05
4.	विधि संकाय	05
5.	शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय	62
6.	प्रौद्योगिकी संकाय	30

तलिका – 3 से स्पष्ट है कि कला संकाय में शिक्षिकाओं की संख्या सर्वाधिक है जब कि वाणिज्य और विधि संकायों में शिक्षिकाओं का अभाव दृष्टिगत होता है।

तलिका – 4

उच्च–शिक्षा स्तर पर संकायवार महाविद्यालयों की शिक्षिकाओं की योग्यताएं

शैक्षिक योग्यताएं

क्रम संख्या	संकाय	पी० जी०	एम०एड०	एम०फिल	पी–एच०डी०	डी०लिट	नेट
1.	कला	121	27	11	240	05	02
2.	विज्ञान	37	03	02	88	–	04
3.	वाणिज्य	01	–	–	04	–	–
4.	विधि	05	–	–	–	–	–
5.	शिक्षक–प्रशिक्षण	–	15	03	50	–	–
6.	प्रौद्योगिकी	एम०एस०सी० 16	एम० टेक 02	–	12	–	–

तालिका – 4 से स्पष्ट है कि कला संकाय में सर्वाधिक अध्यापनरत् शिक्षिकायें पी–एच०डी० और डी०लिट् है जब कि विधि संकाय और वाणिज्य संकाय में पी–एच०डी० योग्यता धारक शिक्षिकाओं का अभाव है।

तलिका –5

कानपुर नगर में उच्च–शिक्षा स्तर पर शिक्षिकाओं और छात्राओं का औसत

क्रम संख्या	संकाय	शिक्षिकाएं	छात्राएं	औसत
1.	कला संकाय	367	29915	1:81
2.	विज्ञान संकाय	130	5751	1:43
3.	वाणिज्य संकाय	05	1041	1:208
4	विधि संकाय	05	1764	1:353
5.	शिक्षक–प्रशिक्षण संकाय	62	575	1:81
6.	प्रौद्योगिकी संकाय	30	1088	1:36

तलिका – 5 से स्पष्ट है कि कला संकाय में अध्ययनरत् अध्यापनरत शिक्षिकाओं और छात्राओं की संख्या ज्यादा होते हुए भी यह औसत 1:81 आता है। सर्वाधिक विचारणीय औसत विधि संकाय पर 1:353 है। सबसे अच्छा औसत प्रौद्योगिकी संकाय पर 1:36 दृष्टिगत होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण के समय कुछ तथ्य उभर कर सामने आये हैं जिससे ज्ञात होता है कि अधिकांश अभिभावक कला संकाय को सबसे अधिक सहज मानते है। घरेलू स्त्रियां परमपरागत आधार पर बी०ए० और एम०ए० का अर्थ समझती है। मध्यवर्गीय परिवार की छात्राएं उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए धन की बचत हेतु कला संकाय को ही अपनाती हैं क्यों कि प्रयोगात्मक परीक्षायें बाधक नहीं होती है तथा प्रवेश आसानी से मिल जाता है। बहुतायत छात्राओं को विवाह हेतु इन संकायों में प्रवेश दिलाया जाता है तथा कुछ ज्ञानार्जन के लिए शिक्षित महिलाएं समाज में शिक्षा के द्वारा अपनी स्थिति में सुधार के लिए बनाये गये नियमों और कानूनों को अच्छी तरह समझ लेती है और उनका उपयोग करती है।

अतः इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि बदलती हुई परिस्थितियों में शिक्षा के द्वारा परिवर्तन शील एवं प्रगतिशील संकाय में वे अपने आपको समायोजित कर पा रही है।

निष्कर्ष

1. कानपुर नगर में कला संकाय के महाविद्यालयों की संख्या सर्वाधिक है जब कि विधि संकाय और वाणिज्य संकाय में महिला महाविद्यालयों का पूर्णतया अभाव है।
2. कला संकाय में छात्राओं एवं शिक्षिकाओं की संख्या सर्वाधिक है, जबकि विज्ञान, वाणिज्य, विधि संकायों में छात्राओं एवं योग्य शिक्षिकाओं का पूर्णतया अभाव प्रतीत होता है।
3. कला संकाय में सर्वाधिक 240 पी–एच०डी०, डी०लिट् योग्यताधारी शिक्षिकायें है जबकि विज्ञान संकाय में पी–एच०डी० योग्यताधारक शिक्षिकाओं की संख्या 88 है। एम०एस०सी० योग्यताधारक शिक्षिकाओं की संख्या 37 है।
4. विधि संकाय में शिक्षिकायें एल०एल०बी० योग्यताधारक है जबकि वाणिज्य संकाय में 4 शिक्षिकायें पी–एच०डी० धारक है तथ्य विचारणीय है।
5. कला संकाय में शिक्षिकाओं–छात्राओं का अनुपात 1:81 है जबकि विधि संकाय में यह प्रतिशत 1:353 है जो कि विचारणीय बिन्दु है।
6. विज्ञान संकाय में शिक्षिकाओं–छात्राओं का अनुपात 1:43 है जब कि वाणिज्य संकाय में यह अनुपात 1:208 है। अतः इस औसत पर योग्य शिक्षिकाओं का अभाव दृष्टिगत होता है।
7. शिक्षक – प्रशिक्षण संकाय और प्रौद्योगिकी संकाय में कार्यरत शिक्षिकाओं छात्राओं का अनुपात 1:81 और 1:36 है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कन्तम्भा, के, (1990): स्टेट्स आफ वीमेन इन रिलेशन टू एजूकेशन, एम्पलायमेंट एण्ड मैरिज, एम०फिल०, एडेल्ट एजूकेशन, श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय।*
2. *गाँधी, बाई० आर० (1977): डेवलपमेंट आफ वीमेंस एजूकेशन एम ग्रेटर बाम्बे : 1961–74 पी०एच०डी० शोधग्रन्थ, एस०एन०डी०टी० विश्वविद्यालय।*
3. *देव, जे०के० (1971) : ए स्टडी आफ इवील्यूशन आफ फीमेल एजूकेशन इन गुजरात टिल इन डिसन्डेस, पी०एच०डी० शोध ग्रन्थ, सरदार पटेल विश्वविद्यालय।*
4. *बुच, एम० वी०, फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन 1978–83।*
5. *बुच, एम० वी०, फिफ्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1988–92, नई दिल्ली: रा०शै०अ०प्र०प०।*
6. *भदौरिया, मृदुला, विमैन इन इण्डिया सम इश्यूजःए०पी०एच० पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*